Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

अध्ययन शीर्षक-पोखाल क्षेत्र में आलू की खेती: आर्थिकी में परिवर्तन का अध्ययन

Bhanu Prasad[1]* Dr. Mahesh Singh[2]

[1] Research Scholar, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

[2] Assistant Professor, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

सारांश - उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि को काफी मेहनत का काम माना जाता है, क्योंकि यहाँ पर सभी काम शारीरिक परिश्रम से किया जाता है। खेती भी कई पीढ़ियों के तर्ज पर किया जाता रहा है। यह भी कारण रहा कि आजीविका के साधनों की कमी के कारण लोग यहाँ से बड़ी मात्रा में पलायन कर रहे हैं। हालांकि इसप्रकार की खेती में दैनिक आवश्यकताओं को पूरा होने की गुंजाइस रहती थी, पर अधिक लाभकारी नहीं थी। स्थानीय ज्ञान को वैज्ञानिक तरीकों से कृषि की विधि को अपनाकर इसे आय का स्थाई तथा लाभकारी साधन के रूप में विकसित किया जा सकता है। परम्परागत खेती करना लागत के रूप में अधिक तथा आर्थिक अर्जन में कम उपयोगी है। नकदी फसल की खेती करना कम लागत में अधिक लाभदायक है।

---------------------------------x---------------------------------

1. परिचय

उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में ग्रामीण जीवन वास्तव में काफी चुनौतियों से भरा है। यहॉ आजीविका के साधनों की कमी के कारण पलायन भी विकट समस्या के रूप में यहॉ के मूल निवासियों को किसी न किसी रूप में प्रभावित कर रहा है। आजिविका में सामुदायिक जीवन निर्वाह के मूल आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपड़ा और मकान के लिये अनिवार्य संसाधन के तौर पर सम्मिलित किया जा सकता है। स्थानीय ज्ञान को वैज्ञानिक तरीकों से कृषि की विधि को अपनाकर इसे आय का स्थाई तथा लाभकारी साधन के रूप में विकसित किया जा सकता है। परम्परागत खेती करना लागत के रूप में अधिक तथा आर्थिक अर्जन में कम उपयोगी है। नकदी फसल की खेती करना कम लागत में अधिक लाभदायक है। संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए ग्रामीणों के आर्थिक स्तर को बढ़ाने के लिए पहाड़ी क्षेत्रों में परम्परागत फसलों के स्थान पर नकदी आधारित फसलों का प्रचलन बढ़ रहा है।इसका त्वरित उदाहरण पोखाल क्षेत्र में आलू की नकदी फसल की खेती जो स्वादिष्ट होने के कारण इसकी मॉग भी काफी हो रही है। व्यावसायिक उपयोग किया जाने हेतु उक्त ग्रामों के निवासियों द्वारा आलू का उत्पादन किया जा रहा है। इससे उसका आर्थिक लाभ का आंकलन करना आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार से प्रस्तुत परियोजना को “पोखाल क्षेत्र में आलू की खेतीः आर्थिकी में परिवर्तन का अध्ययन” का बड़े साधनके रूप में प्रभाव के दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है।

2. परिकल्पना

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया।

“पोखाल क्षेत्र में की जाने वाली आलू की खेती परम्परागत खेती के बजाय अधिक लाभदायक है।”

3. उद्देश्य

शीर्षक चुनने का मुख्यउद्देश्य निम्न है।

1. आलू की खेती करने का जीविकोपार्जन के सन्दर्भ में अध्ययन करना तथा पलायन पर उसका प्रभाव का विश्लेषण करना।

2. परम्परागत खेती तथा नकदी फसलों की खेती का तुलनात्मक ऑकलन करना।

3. खेती के तरीके बदलने पर ग्रामीणों की आर्थिकी का अनुमान लगाना।

4. क्षेत्र में अन्य प्रकार की नकदी फसलों की संभवनाओं की तलाश करना।

4. समस्या का सीमांकन

समय श्रम और सीमित संसाधनों का बेहतर उपयोग करने के दृष्टिगत समस्या को ग्राम पोखाल, तथा कण्डियालगॉव के आसपास के क्षेत्रों तक सीमित रखा गया।

5. अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत परियोजना कार्य हेतु विकास खण्ड भिलंगना के पोखाल, तथा सीमान्तर्गत विकास खण्ड जाखणीधार के ग्राम पंचायत कण्डियालगॉव को चुना गया जिसकी समुद्र तल से ऊंचाई लगभग 1520 मीटर तथा अक्षांश देशान्तर स्थिति 30023' N 78^0 51'E/ 30.24^{0}N 78.52'E हैं। उक्त ग्रामों की राजस्व भूमि मिली हुई है परन्तु प्रशासनिक रूप से यह अलग अलग विकास खण्ड में सम्मिलित हैं। इनकी अपने अपने विकास खण्ड मुख्यालय से दूरी लगभग 24-25 किमी0 एक दूसरे के विपरीत दिशा में है। इस क्षेत्र में करीब 13-14 वर्षो से आलू की खेती की जा रही है। इससे पहले यहॉ धान तथा गेंहूॅ की खेती की जाती थी। फरवरी माह के शुरूआत में यहॉ पर लोग खेती की तैयारी कर देते हैं। मार्च के शुरूआत में आलू की बुआई कर देते हैं जो जून के अन्त तक तैयार हो जाती है।

6. कार्य प्रणाली

1. जनसंख्या- प्रस्तुत परियोजना हेतु सीमांकित क्षेत्र के परिवारों को चुना गया।

2. ऑकड़ों को एकत्र करने हेतु नमूने का चयन (Sampling) - प्रस्तुत परियोजना हेतु Random Sampling के आधार पोखाल तथा कन्डियालगॉव के 96 परिवारों को चुना गया।

3. ऑकड़ों को एकत्र करने हेतु उपकरण (Tool used for collection of data) -

प्रस्तुत परियोजना हेतुऑकड़ों को एकत्र करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। जिसके आधार पर पोखाल तथा कन्डियालगॉव के स्थानीय तथा आलू की खेती से जुड़े लोगों से साक्षात्कार किया गया। जिससे इसके खेती करने की जानकारी तथा उपयोगिता आदि की अधिक जानकारी जुटाई गई।

दैनिक उपयोग-आलू लगभग पूरे विश्व में पाया जाने वाला सर्व सुलभ तथा सस्ती सब्जी होने के कारण स्थानीय निवासियों के द्वारा इनका प्रयोग किया जाता है। तथा स्थानीय निवासियों द्वारा प्रचुर मात्रा में निरन्तर दैनिक उपभोग में इसका उपयोग किया जाता रहा है। आलू कई अन्य उपयोग चिप्स पकौड़े बनाने में भी उपयोग में भी लाया जाता है।

पारंपरिक फसलों तथा आलू की नकदी फसल का जीविकोपार्जन तथा आर्थिक संसाधन के रूप में समाधान अध्ययन हेतु निर्धारित ग्रामें के लोगों से विभिन्न जानकारी लेते हुए उनके सुझावों पर भी चर्चा की गई कि किस प्रकार से इसको व्यावसायिक रूप से आजीविका तथा आर्थिकी का साधन बनाया जा सकता है।

फसल	प्रजाति	लाभ	हानि
पारंपरिक फसल	धान, दालें, मडुआ, झंगोरा	चावल तथा दालों की प्राप्ति एवं पशुओं के लिए धान की पत्ती (पराली) का चारा।	चावल अपने भरण पोषण के लिए अपर्याप्त होने के साथ–2 आर्थिक आय में कोई योगदान नहीं। दालो का व्यापार योग्य उत्पादन नहीं होने के कारण उचित लाभकारी मूल्य का न मिलना।
नकदी खेती	आलू	आलू की खेती से दैनिक उपभोग की पूर्ति के साथ–2 आर्थिक आय में योगदान में सहयोगी है। इसका भरपूर उत्पादन के कारण व्यापारी द्वारा सीधे खेती से उत्पादन को उठाया जाता है तथा उचित लाभकारी मूल्य मिल जाती है।	आलू की खेती से पशुओं के लिए चारापत्ती (पराली) का न मिलना।

निम्न तालिका से ग्रामीणों से अनुमान लगाकर उपरोक्त खेती से होने वाली अनुमानित आय के बारे में समझाया गया -

फसल	लागत प्रति नाली	उत्पादन प्रति नाली	बिकी दर @ अनुमानित	अन्तर लाभ अनुमानित प्रति नाली रू0 में
धान	1600.0	लगभग 1.5 कुन्तल	30 रू0 प्रति किलो	4500.0
दालें	1200.0	लगभग 1.0 कुन्तल	200 रू0 प्रति किलो	2000.0
आलू	1500.0	लगभग 2.5 कुन्तल	25.0 रू0 प्रति किलो	6250.0

ऑकड़े ग्रामीणों से ली गई जानकारी के अनुसार हैं।

7. विश्लेषण

1. इससे पहले आप पूरी खेती पर स्थानीय फसल (परम्परागत कृषि) उगाते थे?

हॉ/नहीं

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
96	100.0	0	0.0

2. क्या अब परम्परागत खेती में ह्यस हो रहा है?

हॉ/नहीं

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
96	100.0	0	0.0

3. **आप स्थानीय परम्परागत खेती में रूझान होनेके लिए किसे उत्तरदायी मानते हैं?**

1. कृषि में जानकारी का अभाव
2. मशीनों का अभाव
3. विपणन की सुविधाओं का अभाव
4. उपरोक्त सभी।

कृषि में जानकारी का अभाव	मशीनों का अभाव	विपणन की सुविधाओं का अभाव	उपरोक्त सभी
49	24	12	11
51.04	25.0	12.50	14.45

4. **क्या आर्थिक समृद्धि के लिये परम्परागत खेती को बदलना चाहिए?**

हॉ/नहीं

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
94	97.92	02	02.08

5. **क्या कृषि में रोजगार तथा नकदी वाली खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए?**

हॉ/नहीं

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
94	97.92	02	02.08

6. **आपको आलू की खेती के लिये कृषि विभाग से समुचित सहयोग मिल पाता?**

हॉ/नहीं

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
96	100	0	0

7. **परम्परागत खेती तथा वर्तमान समय पर कर रहे खेती में आपको शारीरिक परिश्रम में कोई अन्तर महसूस हुआ है?**

1. कम परिश्रम/लागत युक्त
2. अधिक परिश्रम/लागत युक्त
3. कोई अन्तर नहीं

कम परिश्रम/लागत युक्त	अधिक परिश्रम/लागत युक्त	कोई अन्तर नहीं
76	17	03
79.17	17.71	03.12

8. **आलू की खेती करने पर चारापत्ती का नुकसान होता हैं?**

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
90	93.75	06	06.25

9. **खेती के प्रचलन के परिवर्तन से सरकारी व्यवस्थाओं में क्या सुधार हुआ है?**

सुधार हुआ है (स्कोर)	प्रतिशत	सुधार नहीं हुआ है (स्कोर)	प्रतिशत
82	85.42	14	14.58

10. **आलू आधारित लघु उद्योग स्थापित करने की आवश्यकता है?**

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
96	100.0	0	0.0

11. **इस प्रकार की खेती के साथ किस प्रकार कालघु व्यवसाय किया जा सकता है?**

1. खाद्य प्रसंस्करण में
2. सब्जी व्यवसाय
3. चाय/खाना के ढाबे
4. उपरोक्त सभी

खाद्य प्रसंस्करण में	सब्जी व्यवसाय	चाय / खाना के ढाबे	उपरोक्त सभी
20	56	10	10
20.83	58.33	10.42	10.42

12. आपको इस क्षेत्र में नई किस्म की खेती करने के लिये सरकारी सहयोग मिल रहा है?

हॉ/नहीं

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
78	81.25	18	18.75

13. क्या आलू की खेती से स्थानीय स्तर पर लघु निवेश आधारित उद्योग विकसित होंगे?

हॉ/नहीं

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
80	97.56	02	02.44

14. कृषि आधारित उद्योगों को स्थापित करने पर खेती तथा पशुपालन को महत्व मिलेगा?

हॉ/नहीं

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
86	89.58	10	10.42

15. उत्तराखण्ड में हो रहे पलायन को रोकने में इससे मदद मिल सकती है?

हॉ (स्कोर)	प्रतिशत	नहीं (स्कोर)	प्रतिशत
82	85.42	14	14.58

16. आर्थिक दृष्टिकोण से आपको परम्परागत या नकदी फसली खेती में कौन लाभकारी प्रतीत होती है? विचार लिखिए।

सभी ने अपने-अपने विचार से नकदी फसली खेती को पर्यावरणीय दृष्टिकोणसेभी महत्वपूर्ण माना है, क्योकि आलू के लिये धान के बजाय पानी की कम आवश्यकता होती है।

8. परिणाम

ऑकड़ों के विश्लेषण से निम्न परिणाम प्राप्त हुए -

1. सभी 96 उत्तरदाताओं ने माना कि वे पारम्परिक खेती करते थे।

2. सभी (100%) लोग मानते हैंकि अब वे परम्परागत खेती में ह्यस महसूस कर रहे हैं।

3. स्थानीय परम्परागत खेती में रूझान के कारण के तौर पर 51.04% लोगों ने कृषि में जानकारी का अभाव होना बताया। शेष 25.0% लागों ने मशीनों का अभाव, 12.5% विपणन की सुविधाओं का अभाव तथा 14.45% ने उपरोक्त सभी कारणों का जिम्मेदार मानते है।

4. आर्थिक समृद्धि के लिये परम्परागत खेती को बदलने की 97.92 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने राय रखी कि कृषि पर आधारित रोजगार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। 02 लोग परम्परागत खेती को बदलने के पक्ष में नहीं थे।

5. कृषि में रोजगार तथा नकदी वाली खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए इस पर 94 लोगों ने हॉ में उत्तर दिया तथा केवल 2 लोगों की राय नहीं में थी।

6. सभी उतरदाताओं ने बताया कि आलू की खेती के लिये कृषि विभाग से समुचित सहयोग मिलता है।

7. परम्परागत खेती तथा वर्तमान समय पर कर रहे खेती में शारीरिक परिश्रम की तुलना करने पर 79.17 प्रतिशत को कम परिश्रम/लागत युक्त 17.71 प्रतिशत को अधिक परिश्रम/लागत युक्त तथा 03.12 प्रतिशत को काई अन्तर महसूस नहीं हुआ।

8. आलू की खेती करने पर 93.75 प्रतिशत लोगों ने कहा कि चारापत्ती का नुकसान होता हैं तथा 06.25 प्रतिशत लोगों ने नुकसान न होने की बात कही पर कहा कि वह इसके नुकसान को पूरा कर लते हैं।

9. खेती के प्रचलन के परिवर्तन से सरकारी व्यवस्थाओं में सुधार 82 (85.42%) को माना है तथा 14 (14.58%) ने परिवर्तन नही होने का विकल्प चुना।

10. सभी ने उत्तरदाताओं का कहना था कि आलू आधारित लघु उद्योग स्थापित इस व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने के लिये आवश्यक है?

11. इस प्रकार की खेती के साथ और किस प्रकार का लघु व्यवसाय किया जा सकता है उत्तरदाताओं के द्वारा इस प्रकार अपनी राय रखी गई -खाद्य प्रसंस्करण सम्बन्धी व्यवसाय पर 58.33 प्रतिशत लोगों की राय थी, सब्जी व्यवसाय के लिये 20.83 तथा 10.42 प्रतिशत ने चाय/खाना के ढाबे के व्यवसाय की तथा 10.42 प्रतिशत ने उपरोक्त सभी व्यवसाय हाने की संभावना बताई।

12. इस क्षेत्र में नई किस्म की खेती करने के लिये सरकारी सहयोग 81.25 प्रतिशत लोगों ने सहयोग प्राप्त होने की बात रखी। इसके विपरीत 18.75 प्रतिशत लोगों ने कोई खास सहयोग नहीं मिलने की राय रखी।

13. 97.56% लोगों का मानना था कि आलू की खेती से स्थानीय स्तर पर लघु निवेश आधारित उद्योग विकसित होंगे 02.44% ने माना कि इसकी संभावना नहीं है।

14. 89.58% लोग कृषि आधारित उद्योगों को स्थापित करने पर खेती तथा पशुपालन को महत्व तथा बढ़ावा मिलने की राय रखते हैं सिर्फ 10 लोगों के द्वारा खास महत्व न मिलने की राय को नकार दिया।

15. उत्तराखण्ड में हो रहे पलायन को रोकने में व्यवसायपरक खेती से 85.42% उत्तरदाताओं ने माना कि अवश्य ही पलायन पर काफी कुछ हद तक कमी आयेगी।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

अतः अध्ययन के बाद तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि “पोखाल क्षेत्र में की जाने वाली आलू की खेती परम्परागत खेती के बजाय अधिक लाभदायक है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई।

10. स्वानुभव

1. विभिन्न स्थानीय खेती की सांस्कृतिक परम्पराओं का ज्ञान होगा।

2. स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों का ईष्टतम उपयोग की जानकारी होगी।

3. रोजगारपरक कृषि तथा स्थानीय कृषि व्यवसाय में सामंजस्य होगा।

4. परम्परागत खेती की व्यवस्था परिवर्तन को बढ़ावा मिलेगा।

11. समाज पर प्रभाव

इस प्रकार के अध्ययनों से स्थानीय निवासियों लोगों में पर्यावरण संरक्षण जागृति तथा इन प्रजाति के पेड़ पौधों के संवर्धन की प्रेरणा मिलेगी। जिसका आजीविका के साथ-साथ पर्यावरण पर सकारात्मक परिणाम मिलेगा। रोजगार के लिये पलायन का रहे युवा वर्ग को इन प्राकृतिक संसाधनों से कुटीर तथ लघु उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा तथा इन आजीविका के साधनों का पर्यावरण पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं होगा क्योंकि यह जैविक उत्पाद हैं।

12. अध्ययन क्षेत्र में शोध की संभावनाएं

भविष्य में इस प्रकार के शोध कार्य को विस्तृत तथा अधिक जनसंख्या पर अधिक सार्थक परिणामों के लिये किया जा सकता है। किया जाना चाहिए ताकि इस प्रकार के शोध में सामने आने वाली समस्याओं का निदान सरकार अपने स्तर से कर इस प्रकार की खेती को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम बढ़ाया जा सके तथा यह जीविकोपार्जन तथा रोजगार का साधन बनाया जा सके।

13. सन्दर्भ (References)

1. प्रस्तुत परियोजना कार्य हेतु गॉव के लोगों के उपयोगी साक्षात्कार, उत्पादन के तरीके तथा निम्न पत्र पत्रिकाओं तथा पुस्तकों का अध्ययन को उपयोग में लाया गया।

2. Dadhwal KS. et.al. 1989. Agroforestry systems in the Garhwal Himalayas of India. Agroforestry Systems. 7(3): pp. 213-225.

3. दूरदर्शन का कृषि चैनल आलू की खेती पर प्रस्तुत कार्यक्रम।

4. www.google.com

5. कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका सितम्बर 2020 page number 19-24.

6. सृजन पत्रिका 2015 (राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस, उत्तराखण्ड का शोध सारांश) page number 1-24.

Corresponding Author

Bhanu Prasad*

Research Scholar, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand